

शेखर रचित  
गजल ओ गीत

190  
3 गीत



शेखर प्रकाशन

पटना-२३



# गजल ओ गीत

पृष्ठान्त २५४  
विनिर्दिष्ट २५४  
३५-१९५४ २५४

पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी  
(साहित्य अकादमी पुरस्कारसे सम्मानित)

प्रकाशक :

**शेखर प्रकाशन**

टेक्स्टबुक कॉलोनी, इन्द्रपुरी, पटना-२३



\* मुद्रक एवं प्रकाशक :  
शेखर प्रकाशन  
टेक्स्टबुक कॉलोनी  
इन्द्रपुरी, पटना-२३

(C) श्रीमती चित्रा चौधरी

\* प्रथम संस्करण

श्रावणी पूर्णिमा

अगस्त, १९६१

मूल्य : ११/- (एगारह) टाका मात्र

शेखर रचित :

गजल ओ गीत

SHEKHAR RACHIT  
GAJAL-O-GEET

## प्रकाशकीय

मैथिली साहित्य मध्य पं० मुधांशु 'शेखर चौधरी' एकटा एहन हस्ताक्षर जनिक परिचय देब एकटा छुछुन प्रयास होयत । तथापि कोनो पोथीमे साकारक प्रति प्रकाशकीय दृष्टिकोणे दू शब्द कहब कर्तव्य भऽ जाइत छँक । एहिठाम किछुए शब्दमे हम अपन कर्तव्यक निर्वाह करय चाहब ।

शेखर जी एकटा महान उपन्यासकार, नाटककार, कथाकार, कवि, आलोचक-विश्लेषक, सम्पादक-पत्रकार, अभिनेता-निर्देशक छलाह आ मैथिली साहित्य एवं समाजक बीच आर कतेको कारणे लोकप्रिय छलाह मुदा हमरा लेल ओ हनर पिता छलाह आ तेँ हम एहिठाम मात्र पितृकर्तव्यक निर्वाह भरि कऽ नहि अछि । इच्छा छल जे हुनक स्मृतिमे किछु अविस्मरणीय काज करी जे एखन धरि संभव नहि भेल अछि । तथापि हुनकहि स्मृतिमे हुनकहि नाम छ 'शेखर प्रकाशन' (शेखर प्रकाशन, मुद्रक एवं प्रकाशककेँ साकारक रूपमे) केँ पुनर्जीवित करबाक प्रयास कयल अछि ।

शेखर प्रकाशन एखन बालरूपमे अछि आ वात्योचित गुणक अनुरूप बहुत छुट्टाकरबाक लौल कऽ रहल अछि । मुदा साधनक अभाव, अनुभवक कमी आ नेनमतिसँ वशीभूत भऽ जेना-तेना 'शेखर' जीक किछु गजल एवं गीतक संग्रह कऽ मैथिली साहित्यक अनुरागीलोकनीक आशीर्वादक अभिलाषी एवं एहि संग्रह रूपी प्रथम पुष्पकेँ ओहि महान आत्मा (शेखर)केँ समर्पित अछि जनिक नाम ओकर सफलताक अवलम्ब छँक ।

—शरदिन्दु कुमार चौधरी







## मुसकी भरल स्नेह दियऽ

एते पैघ दुनियाभे एकसरे चिन्हार अहाँ,  
जिनगी भरि कयलहुँ बहुतो उपकार अहाँ।

छुच्छ हमर हाथ, परसि, अहाँ देलहुँ अपन हाथ,  
एकाकारक जिनगीकेँ कयलहुँ द्विकार अहाँ।

फूटे-फुट उपवन मे फुट-फुट दू फूल छल,  
गरा हार अन्तरकेँ कयल एकाकार अहाँ।

धार अपन नेहरसँ विदा भेल सागर दिस,  
बाटक पियासलकेँ कयलहुँ उद्धार अहाँ।

आकाशक चान प्राण गेल दूर बहुत दूर,  
हमर नयन-धरतीकेँ कयलहुँ अन्हार अहाँ।

इच्छा अछि अन्तिम ई अन्त बेर पूर करी,  
मुसकी भरल स्नेह दियऽ बाँहिक पसार अहाँ।



## अहाँ बिनु नहि बनय एको पहर

जानि डुबवैए अयाहो-थाहमे,

मुदा जल बिनु नहि बनय एको पहर।

कदा घोखा एक-एकक चालिमे,

मुदा संग बिनु नहि बनय एको पहर।

अविष्यक की होयत से चिन्ता ने थिक,

मन रमल अपने विगत इतिहासमे।

जिन्दगी ऊधव सहज अछि, सोझ अछि,

मुदा-रस बिनु नहि बनय एको पहर।

अन्हा गेलहुँ पहिल बेरक स्नेहमे,

विवश भऽ गेलहुँ अहाँक गछार मे।

मुदा चुकलहुँ अपन एका विश्व सँ,

मुदा सुधि बिनु नहि बनय एको पहर।

रहै छी भसिआयल सदिखन सोह मे,

काज नहि दोसर कोनो संसार मे।

अहिक इच्छेँ विदा कयलहुँ रोचसँ,

मुदा अहँ बिनु नहि बनय एको पहर।

जरि रहल तन-मन वियोगक धाहसँ,

कतहु नहि पाबी मुशीतल छाँह हम।

अनक बड़का थार परसल सामने,

मुदा जन बिनु नहि बनय एको पहर।





## हृदयक सिनेह

देखने रही हम स्वप्न एक आइ भोरमे,  
हृदयक सिनेह उज्जलि अहाँ लेलहुँ कोर मे ।

मृदु आङ्गुरक स्पर्श नेहाल कऽ देलहुँ,  
हम धन्य भऽ गेलहुँ अपन जिनगीक छोर मे ।

ठोरक अहाँक मुस्की मने जादू कऽ देलक,  
मादक तरंग जागि उठल पोर-पोरमे ।

हा हन्त, मुदा निन्द हमर छीनि के लेलक,  
सौभाग्य के बदलि देलक के नोर-झोरमे ।

सुधमे बताह भेल सगर धूमि रहल छी,  
के देत हमर स्वप्न घुरा विश्व-सोर मे ।

बन्धु सुख न, मृत्युएटा माडि रहल छी,  
क्यो देत नहि से जनै छी दुनियाँक जोरमे ।



## अवधारि बैसल छी

लगैए मन ने कनियो काल जीवन हारि बैसल छी,  
अपन उद्यान अपने हायसँ हम जारि बैसल छी ।

कतेको साङ्गे सतरल लता आकाश चूमै छल,  
कि खोलल पानि फूलक बेरमे हम डारि बैसल छी ।

कतेको यत्नसँ पोसने छलहुँ हम मधुरतम सपना,  
अपन अभिलाष छोर लहासकेँ हम गाड़ि बैसल छी ।

बसाबी घर लगाबी आगि से जिनगी ने थिक जिनगी,  
अपन संहार पर हम दीप लाखो बारि बैसल छी ।

छँटेए लोक बड़ उपदेश, संयत करी अपना केँ,  
जँ मरवे अछि चरम गति रहओ हम अवधारि बैसल छी ।

सुखक वादा जे हमर छल से एखनो कायम अछि ओहिना,  
प्रियक मुँहमे लगाबऽ ऊक आगि पजारि बैसल छी ।





## सहबाक जे सन्ताप अछि

कहवाक अछि जे बात से परचारि कहै छी,  
सहबाक जे सन्ताप अछि, मन मारि सहै छी ।

ओहि दिन, मुनहारि साँझमे चुपचाप चलि देलहुँ,  
सुनसान से जड़कालमे हियमारि रहै छी ।

कहने रही सभ दिनक लेल संग छी अहाँ,  
एकसर छताह धारमे मझधार बहै छी ।

प्रत्यक्ष नै, सपनोमे अहाँ आवि जेँ जेतहुँ,  
उन्निद्र पड़ल, रोग हम लाचार गहै छी ।

छै राति निशाभाग आ घनघोर अन्हरिया,  
अस्तक सुरुज हत भाग एक परतार ढहै छी ।

कुकुरोकेँ कारा दऽ कऽ क्यो पुचकारि लैत छै,  
हम छी अनेरा द्वारि सभ दुत्कार सहै छी ।



## सुनसान पांतरमे

मुघिये हुनक मोनक हमर शृंगार बनल अछि,  
जिनगीक ओ रोगक हमर उपचार बनल अछि ।

काँटक भरल झंखारमे ओझरायल छी जखन,  
फूले हुनक गन्धे हमर आधार बनल अछि ।

सुनसान पांतरमे जखन अपस्यांत भेलहुएँ,  
छाहरि हुनक मधुवातकेर संचार बनल अछि ।

बड़ प्याससँ तबधल जखन हम आँट भेल छी,  
मुस्की हुनक अख्यासमे रसधार बनल अछि ।

कोड़ो गनैत आहिमे हम राति बिताबी,  
सपनाक एक मधुरतम संसार बनल अछि ।

जोही कते हम बाट से फड़िछा लियऽ कने,  
चलते न नाम तार ई लाचार बनल अछि ।





## खाली चिनमार हमर

बजैए संगीत बिना जीवन-सितार हमर  
लागय मशान-सून आङन-घर-द्वार हमर ।

अनधुन हम पड़ल खाट कोड़ोमे आँखि टेकि,  
अछि के बीमार मनक करते उपचार हमर ।

प्यासे हम आल-बाल धार बड़े दूर घाट,  
बुझ दरस-परस नै, खाली चिनमार हमर ।

दूरागन वंशी धुनि शीकि रहल हमर प्राण,  
जायब तँ जायब कोना, डेग वेसम्हार हमर ।

रहब कतहु दूर कात अछि के जे टाहि देत,  
पच्छी ने आवय एक धधकैए चार हमर ।

पाहुन तँ पाहुन छल अटकि गेलै कतहु चित्त,  
बात-बातमे अन्हार, लूटल संसार हमर ।



## पूरल ने एको आस हिया

जे गीत भेटल भासमे, चट गाबि लेलहुँ हम,  
संगीत रचब सोझ नै, मुँह बाबि देलहुँ हम ।

देखल ने बाट हाटकेर हम पयर बढीलहुँ,  
ठमक अतेर कष्ट मुदा पाबि लेलहुँ हम ।

मुनने रही सिनेह बड़े पैघ छँ सम्बल,  
गप्पो ने करब आव मुँहे जाबि लेलहुँ हम ।

पोसब बड़े अधलाह थिक जनमार सेहन्ता,  
पूरल ने एको आस हिया दाबि लेलहुँ हम ।

अगुआ बनब सभ बातमे नीक नै होइ छै,  
काते रही, काते चली, से भाबि लेलहुँ हम ।

व्यर्थे डेंगायब पानी तेहन काज नै छँ काज,  
जिनगीक ने उपयोग ततऽ आबि गेलहुँ हम ।





## जिनगी पहाड़ भेल

की भेल अछि अन्दर ने कने मोन लगैए,  
मुलफा जकाँ करेज मे दिन-राति गड़ैए।

ओ दिन छलै, पहाड़सँ भिड़ि जाइत रही हम,  
डेगो धरव जे थाहिकऽ बड़ भार लगैए।

जकरा छलै दरेग से रुसि गेल ने कहिया,  
मनाकऽ आनि लेव से न भाँज भेटैए।

आने सभक ले देह ई दिनराति गलल छल,  
अनठा देलक—हमछी, ओम्हर रंगताल करैए।

जिनगी पहाड़ भेल, ने टपनाइ ई सहज,  
धारक कछेर, प्याससँ ई जीह सटैए।

खयलहुँ बड़ खयबाक छल अनुभव पका-पका,  
पाकल सनक जे आम, चूसि, दूर फेकैए।

कहैत अछि सभ लोक जे भगवान छथि कतहु,  
लक्षण ने तकर, आश ओ विश्वास धसैए।



## जानि अहाँ करबे की ?

हमर घाव हमरे अछि, जानि अहाँ करबे की ?  
दर्द बड़ जोरक, अनुमानि अहाँ करबे की ?

पिपतीपरक नाच अपन अपने टा देखने रही,  
कोढ़क ऐ ऐँठनकेँ छानि अहाँ करबे की ?

हाथक जे मोती छल अनचोके हेरा गेल,  
केहन बेपानि भेलहुँ, पानि अहाँ करबे की ?

भितरक कोलाहलसँ उजगुज ई मोन व्यथित,  
धारक ओहि पार प्राण, फानि अहाँ करबे की ?

भोरक ई चान केहन, लागय अन्हार जकाँ,  
सुरजक इजोतकेँ दफानि अहाँ करबे की ?

देखल अछि सूमल अछि, सभ कथूक सीमा छै,  
जिनगी असीमतम उबानि, अहाँ करबे की ?

बौआयल कते छी, बौआयव आर बाँकी अछि,  
बाटे जँ अन्त होअय, कानि अहाँ करबे की ?





## अथाह ई सागर

नहि वृक्ष रहल छी किए हम जीवि रहल छी,  
जे फाटि चुकल केथरी किए सीवि रहल छी।

छल मनमे भेल, छूबि लेब सोझ अछि, चान,  
हाथे बढ़यबाक ताओमे हम लीवि रहल छी।

मरुभूमि बीच देहरि आ भाँय—भाँय—भाँय,  
खाली गिलास सेप अपन पीबि रहल छी।

नहि सूझि रहल बाट आ अथाह ई सागर,  
नहि होयत कयल पार पाल झीकि रहल छी।

छल संगी जे एक सेहो छोड़ि पड़ायल,  
लसि कोन एहन व्यर्थ देह नीरि रहल छी।

नहि वृक्ष रहल छी किए जीवि रहल छी,  
जे फाटि चुकल केथरी किए सीवि रहल छी।



## चुप्पी मारि बैसल छी

फाटि लियऽ जिनगी कोना, समयतँ कटने न कटय,  
जी हमर सहजे उचाट कतबो ई हटने न हटय।

चुप्पी मारि बैसल छी कहूँ ओ ने आवि जाथि,  
नमहर जे प्रतीक्षा अछि, कतबो छटौने ने छटय।

सनेस दऽ कऽ गेल छथि, राखी तँ कतऽ राखी,  
आँचर छोट बबूर ढेर, कतबो अँटौने न अँटय।

मोन तँ छिड़िआयवला थतमारि कोना राखब हम,  
जीवनक ई सौदा केहन कहना पटौने न पटय।

मीठमीठ ददं होअय, राइसँ से ताड़ भेल,  
लाख हम उपाय करी उपचार भेटने न भेटय।

जिनगीकेँ काछि कोना देहसँ हम दियऽ फेकि  
छोट सनक हिया जकर कतबो ठठीने न ठठय।





## हेरा गेल अछि

संजोगल छल बड़े यतनसँ, हेरा गेल अछि  
मनक भाव गम्भीर चोटसँ नेरा गेल अछि ।

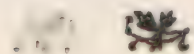
सोनित आर पसेना सँ सिचलहुँ फुलवारी,  
निर्दय हाथे हऽर ताहि पर फेरा गेल अछि ।

बड़े आगि छल घहघह सदिखन जरिते अयलहुँ,  
मेघक पत्थर खसिते सभटा सेरा गेल अछि ।

एकसरआकेँ नै होइत छै कोनो सपना,  
दुखक काँटसँ आकुल मन ई, घेरा गेल अछि ।

नै खसैत अछि वज्र साइत जँ हम छुतहर छी,  
मृत्यु कठोर हमर जीवनकेँ घेरा गेल अछि ।

नहि अबैत अछि लग केओ कुशलो टा पूछऽ,  
हम अशुभक अवतार, विश्व मन डेरा गेल अछि ।



## उपहास बनल छी

नकार भरिक लोककेर उपहास बनल छी,  
कनुबो नै मुँह लगा सकय निघास बनल छी ।

सहक बड़ाँलहुँ हाथ तँ चट वज्र खसि पड़ल,  
कूजल छै भाग जकरे से हताश बनल छी ।

इरी नै निवहि सकल क्षणक रौद्र-पानिमे,  
निर्बल मसान बीच दुखक रास बनल छी ।

मननो नै सुखक भान हमर त्राण अछि कतऽ,  
बेतो-बवूर उगि नै सकय चास बनल छी ।

जाइत अछि पूछल समयपर आक आ धथूर,  
कूजो मे फूल अधम अमलतास बनल छी ।

हमरा नै टोकय लोक, अपन नीक जँ चाहय,  
भारी अलच्छ खापड़ि अशुभ त्रास बनल छी ।





## विश्राम टा चाही

अपने बेसाहल बाटसँ पेरा रहल छी हम,  
अपने लगाबोल काँटसँ घेरा रहल छी हम ।  
बचनक ने एतवे अर्थ जे क्यो जान दऽ देअय,  
अहाँक घुघून मुँहसँ डेरा रहल छी हम ।  
अहाँक नमहर जीहकेर अन्ते ने हम पाबी,  
श्रम शक्ति व्यर्थ पानिमे हेरा रहल छी हम ।  
आबो तँ चेन लेबऽ दिय, हाथ जोड़ै छी,  
बड़दे अर्का तँ राति-दिन पेरा रहल छी हम ।  
सभ छी अहाँ, व्यवहार में मनुखे टा तँ नै छी,  
जिनगीक संज्ञावातमे सेरा रहल छी हम ।  
सत्ये कही, एहि वयसमे विश्राम टा चाही,  
चिन्ताक भारी मे भीड़ रेड़ा रहल छी हम ।



## गजल व्यंग्य

धन्य अहाँ, धन्य अहाँ अपने ढकैत छी,  
जानी छोड़ी घास नहि गौरवे फटैत छी ।  
अपन गोल, अपन ढोल अपन बोल मीठ महा,  
आन यदि नीक कहय तकरो कटैत छी ।  
अपने प्रशंसामे समय बरु बीति जाय,  
आन यदि टोकि देलक तकरा हटैत छी ।  
घयलक छपास रोग आर किछु करवे नहि,  
अपन लेर चूअल जँ अपने चटैत छी ।  
इ नहि देखब जे लोक की कहैत अछि,  
की आर केहन अहाँ दुनिया जनैत अछि ।  
लाज जे बिलायल अछि सभ ठाँ डटैत छी,  
बेघर आ हेहर जकाँ अपने छँटैत छी ।  
अपन तूर झाँपि भूर सभकेँ सप्त कही अहाँ,  
अपनेकेँ उछाल' ले सदिखन खटैत छी ।





## फरकि उठय आँखि

फरकि उठय आँखि जखन चिन्ता हो बेसम्हार,  
दरकि उठय कोंढ़ कने मनमे अबिते सुमार ।

मीठ केहन मिलन-राति क्षण भरिमे ससरि जाय,  
एकसरक समय तीत दिनमे लागय पहाड़ ।

फूलक रस रूप गन्ध मोहि लैअय ज्ञान-प्राण,  
काँट चुभन पीर गहन प्राण हो तनसँ बहार ।

अहँक दरस बरस-बरस सीमासँ भेल दूर,  
सपन सरस दिन-दिन भरि सुलय-सालय हजार ।

गेलहुँ अहाँ गेलहुँ भलँ, हम रहलहुँ बीच बाट,  
आगाँ किछु देखल नहि, जन-जन रेड़ल बजार ।

हमछी भोतिआयल जकाँ सड़क कात गुम्म ठाढ़,  
भेटय चिन्हार जते भीतरसँ अनचिन्हार ।



## हृदयकेर तार छिनायल

हुनका विदा होइते हमर घर द्वार छिनायल,  
छोटे सनक संसार छल भकरार छिनायल ।

इसिते कटै छल बाट दूरक घाट सहज छल,  
हुनका बिना जीवन-सफर आधार छिनायल ।

हुनका हमर उद्यानमे जे फूल अछि निर्गन्ध,  
रस-रूप रचना, सभ ओकर आकार छिनायल ।

दिन राति विड़रो बीच हम औनाइ छी सरिपहुँ,  
नय स्वप्नकेर मधुवातकेर आगार छिनायल ।

मान पर चालित हमर छल डेग तँ निस्सन,  
जे कण्ठ, स्वर-लहरी, हृदयकेर तार छिनायल ।

बेहनी कठिन संघर्ष हो अड़ले रही मुदा,  
हुनके अभावमे हमर रसधार छिनायल ।





## दम तोड़ि रहल छी

युगसँ पड़ल अथाहमे दम तोड़ि रहल छी,  
भाय्ये फुटल जेँ माथ अपन फोड़ि रहल छी ।

दुर्दिनक फेरमे सदा हम काहिये कटलहुँ,  
त्राणक कोनो जोगाइ हम हथोड़ि रहल छी ।

लीखल रहैत नीक तँ संगे किए छुटैत,  
दुःखेक भीत, जाल फँसल, जोड़ि रहल छी ।

वशमे हमर नै मोन एको पहर एको क्षण,  
विधि केर उसाहल डाढ़ पीठ ओड़ि रहल छी ।

बैसल छी छाउर-ढेर जे इच्छाक भूत अछि,  
अपने लगाओल आगि अपने खोरि रहल छी ।

संसार भरि सन्ताप हमरे भाग पड़ल छल,  
हुकहुक करय ई प्राण ऐखन छोड़ि रहल छी ।



## निराश नै करब

हम मन ओछोने बाट छी निराश नै करब,  
जिन्दगीन सन आधार छी हताश नै करब ।

जिन्दगीर उठै छै हृदय-मन डोलि रहल अछि,  
कुत्तास बेसि पार अहाँ वास नहि करब ।

कुछिने अहीन काँट-कुशक कष्ट गिड़ै छी,  
कम बिचरि आबुर बित्तकेँ उदास नै करब ।

अहंर उठल विकल मेघ छारि लेने छै,  
सोख करैत प्राण हमर नाश नै करब ।

कुत्तास बेचीने आयल छी रुक्खे सनक जिनगी,  
कुत्तासमे व्यर्थ झूटमे विनाश नै करब ।

जन्मक कोर ठनकसँ रहि-रहि हिया हहरय,  
जिन्दगी उताहुल अंग, भंग आश नै करब ।





## दर्द तेहन होइए

दर्द तेहन होइए जे शब्दें हम कहि ने सकी,  
बन्हार सून घरक गाढ़ वेदन मोने-मोन सहि ने सकी ।

ठूठ गाछक छाह सनक हमर सपन बाँझ रहल,  
ठाढ़ जे बसात केहेन उपवन देन बहिने सकी ।

फाटि गेलै पाल जकर धार कोना पार करय,  
भसिआइत एकसरहम धार माँझ रहिने सकी ।

सोह निराकार बनल धून्यमे प्रयाण कयल,  
जे किछु अछि शेष बचल तकरा हम गहि न सकी ।

अपन जे संजोगल छल असमयमे भस्म भेल,  
पाथर ई मुन्न देह धधरोमे डहि ने सकी ।

ओकर की भविष्य जकर जीवन अतीत भेलै,  
ऊँच ठाढ़ खँड़हर भूमिकम्पमे डहि ने सकी ।



## स्नेहे टा नै करी

स्नेह ! तेज केहन ओकर धार लगै छै,  
जबोय सन करेज आर-पार लगै छै ।

नदिबन हेरायल जकाँ मोन-प्राण जे रहै,  
बाढी पहर उदास मन बीमार लगै छै,

सन्नाक जाल जोड़ि राति विताबय ।  
जिनगीक आन बात सभ बेकार लगै छै,

जे देलक अपन हृदय अपन ठाम गमौलक ।  
एतनी सनक जे तिल छलै से ताड़ लगै छै,

घोरक हँसी विला गेलै हुलास चल गेलै ।  
विपनीक नोर ढरकि कऽ अमार लगै छै,

सभ किछु करी जहानमे स्नेहे टा नै करी,  
जे कऽ चुकल जीवन ओकर पहाड़ लगै छै ।





## मीठ-मीठ दर्द हमर

मीठ-मीठ दर्द हमर तीत—तीत मोन,  
दिन-देखार हेरा गेल हमर हियक सोन।  
बिजुरी तँ चमकैए कतहु नै घटा,  
खाली अछि, खुक्खे अछि हमर हृदय-कोन।  
बेड़ल फुलवारी अछि फूलक नै पता,  
गाछ नै बिछै नै उपटल सन बोन।  
साइह अछि पानि अछि कतहु नै लता,  
दुनियाँमे छथि नै ओ मानय ने मोन।  
देखलहुँएँ, देखै छी हुनकर ओ छटा,  
आँखिमे नुकायल सन हमर मीठ सोन।



## सुखद सन स्पर्श

जँ निजँत प्रान्तमे एक बेर हुनकासँ भेट भऽ जाइत,  
बनायासे करेजक भार हल्लुक बहुत भऽ जाइत।  
दुखक संसारमे भारी बसातक उठैए झोंका,  
हुनक अयने हजारो काँट सहसा फूल भऽ जाइत।  
जो बँसत दूर हमरासँ किए जी-जान दुखवै छथि,  
जो अवितथि, जोगाओल सपना अनेरे पूर भऽ जाइत।  
बिताबी दिन उछन्नरमे सही उत्पात रजनी भरि,  
बुगक झुलमल हमर ई कण्ठ किछु मधुपान भऽ जाइत।  
कटैए छन पसाहीमे बितैए पहर धधरामे,  
अनह एकान्त, किछुओ काल ले तँ त्राण भऽ जाइत।  
ने अओता से जनै छी की लिखल अछि भाग्यमे हमरा,  
सुखद सन स्पर्श सँ छनमे हमर जँ अन्त भऽ जाइत।





## चमचा-चमत्कार

काज कोनो काज नहि, काज थिक प्रचार,  
भात-दालि भकसव अछि, असल अछि अचार।

नेता अभिनेता तँ खसैत अछि, छँटैत अछि,  
असल थिक छोट-पैघ चमचा-चमत्कार।

जे गुण अछि मक्खन मे नहि अछि से आन,  
लोढ़ि लियऽ हँसोथि लियऽ हजार पर हजार।

रेडियोक चमचा कंट्राक्ट सोझ डांरि,  
चमचेक लेख छपथि बीच अखबार।

जे न करय बुद्धि काज, करय चमचवान्,  
चमचाक प्रबल ऐ युगमे खुजल अछि बाजार।

चमचायल जते लोक तकरे मँदान,  
हे चमचा, हमर लियऽ सोझ नमस्कार।



## नोर

नोर विद्वत्ता नहि थिक लपकैत आगि थिक नोर,  
एक दिन बरिसैत अछि एक दिन धधकैत अछि नोर।

नोर कल्या नहि, उपजैत आक्रोशक चिनगी थिक,  
नगरक नगरक नगरक डहैत अछि नोर।

नोर बात्तल्यक, सिनेहक नहि थिक अभिव्यक्ति,  
नोर 'ब' 'क' संसारकेँ भसिया दैत अछि नोर।

नोर कुदक' जे चुदैत अछि से नाटक थिक टाटक थिक,  
नोरकेँ उनटदैत आयल अछि बान्हल नोर।

नोर बल नहि जे अबलाक ओखिसँ झहरैत अछि,  
नोर इत्ति देखा कऽ जे रहैत अछि से थिक नोर।

नोर नोरमे नोर मे ढाल आ तरुआरि होइत अछि,  
नोरकेँ जे कसमस करैत अछि से थिक नोर।

नोर नुक्कक बेकारी मजूरक बैसारी नहि थिक,  
नोर करवा ले भिड़ि जाइत अछि लड़ि जाइत अछि नोर।





## दौकठमे लसकल प्राण

वताह मोनक नहि कतहु घरद्वार होइ छै,  
सभसँ फराक, निज ओकर संसार होइ छै ।

बसात जेँ उमताइए तँ करैए प्रलय,  
सुधिकेर चलल हिलकोर बेसम्हार होइ छै ।

नेहक गछाड़ल लोक अवश दीन होइए,  
आठो पहर लय नयनमे जलधार होइ छै ।

जे दौड़िकऽ चलय ठेसाय बात-बात मे,  
वैसल रहय जे प्राण ओकर झार होइ छै ।

भोतिआयल जे कखनो सिनेहक गहन बोनमे,  
एक-एक छनक कांट बड़ जनमार होइ छै ।

जेँ हीत नै, जेँ मीत नै तँ जीव अछि केहन,  
दौकठमे लसकल प्राण बड़ बेकार होइ छै ।



## गोलैसी

जो सार अछि, व्यापार गोलैसी,  
जो चरिह सभ कारमे सुख-सार गोलैसी ।

जो मोनमे अति भोगमे सभठां जे अछि हूसल,  
जो के निश्चय राखल अछि उद्धार गोलैसी ।

जो ने सकी, धऽ ने सकी, लऽ ने सकी किञ्छु,  
जो जटहि फाड़ धऽ करय उपकार गोलैसी ।

जो नहि चलय आ कि डेग बढय एक,  
जो सभ किछु देअय अनिवार गोलैसी ।

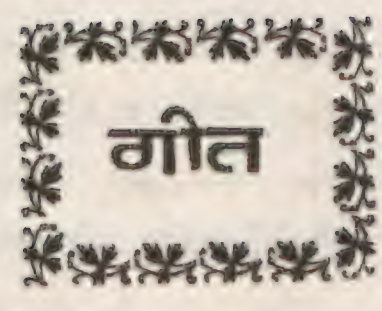
जो छुच्छे पाकि कऽ ने लोभ आर लाभ,  
जो न भेटय, भेटय दरबार गोलैसी ।

जो नै जाइ पुण्य-स्थल बड़का टा बनल अछि,  
जो के कतऽ चलि ने सकय चमकार गोलैसी ।

जो नहाइ खसय आ मरि जाय बड़ अयोध,  
जो देख बड़े जोरसँ ललकार गोलैसी ।







गीत



## आन्हर ई संसार

राति अन्हरिया अन्हर वाटपर आन्हर ई संसार ?  
कलुषित इच्छाकेर मोरीमे सह सह करै नडरिया,  
सद्इच्छा जिनगीक मोहारपर मारै छै ओघरड़िया ।  
अकिलक ओर कतऽ भोतिआयल छैन तकर किछु पता,  
अज्ञानक मेघक लपेटमे नुकल ज्ञान-विजुलता ।  
लटपटायल छै पाँखि सभक तँ करतँ के उद्धार ?  
राति अन्हरिया..... अन्हर ई संसार ।

आइ वेगतीकेर पेठियामे बढल-चढल छै हूलि,  
जकरा हाथ भरल छै ढोआ से सुख कीनय वूलि ।  
भीतर खुक्ख घैल बासन तेँ ढनमुनाइये सदिखन,  
भरल अशर्फीसँ कलसा की उनमुनाइये कौखन ?  
जकर तराजू पासड तकरे आइ चलै व्यापार ।  
राति अन्हरिया..... आन्हर ई संसार ।

सोझ न, जिनगी आइ बनल छै सतरंजक टा खेल,  
देढ़ चालियेँ होइत रहै छै घोड़ा फर्जीक मेल ।  
सोझ बात जे धरय, कहै तकरा सभ, अछि ढहलेल ।  
सोझ बात जे बाजय, बूझल जाय मुद्द, बकलेल,  
आजुक युगमे मुद्द बुद्ध नहि, बुद्ध बनय हजार ।  
राति अन्हरिया अन्हर वाटपर आन्हर ई संसार ।



## ई देश ककर ?

ई देश ककर ? ई कोस ककर ?

जे पेटे टा ले जीवि रहल, जे अपने गुदड़ी सीवि रहल,  
जे देशक महिमा की जानत, जे स्वार्थक आसव पीवि रहल ।  
क्यो करय न रंच भरोस जकर  
की देश तकर ?

अपने समाइकेँ नग्न अंग, टूटल-भाङल अपने अलंग,  
अपने शरीर बनले अपंग, अपने समाजकेर अंग भंग ।  
तैयो सङोरमे जोश जकर  
की देश तकर ?

मुँहगरकेँ ऊँच मचान जतऽ, लुरिगरकेँ ऊँच मकान जतऽ,  
जहगरकेँ घी पकवान जतऽ, अवसर सभ हेतु समान कतऽ ।  
जे मुँहसच, सभटा दोष जकर  
की देस तकर ?

जे सत्ता टा ले मारि करय, रहि-रहि दिल्लीक खेहारि करय,  
जे कथा विकासक की जानत, जे दिन अछैत बटमारि करय ।  
बड़का-बड़का उद्घोष जकर  
की देश तकर ?

जकरा अन्तरमे राष्ट्रभक्ति, छै सहज सिनेहक अतुल शक्ति,  
देशक कण-कणकेँ अपन बुझय, लुटबय सदिखय देशानुरक्ति ।  
देशक उन्नतिये कोष जकर  
की देश तकर ?





## सामाक तानमे

चान-दीप बारि आइ बैसलि के धानमे,  
हरियर परिधान मे।  
ज्योति-स्नात सम अलंग,  
धवलित तन-मन अभंग,  
हरित वर्ण रोम-रोम ठाढ़ ककर ध्यानमे,  
उज्जर मुसकान मे।  
कासक नव चास-बास,  
भेँटक उज्ज्वल विकास,  
छिड़िआयल सिङ्गरहार हास धान-धान मे,  
गन्ध प्राण-प्राण मे।  
दूरागन वंशी धुनि,  
प्रीति-अतिथि-आगम गुनि,  
दारि रहल गीतक समाद कान-कान मे,  
रातिक अवसान मे,  
श्वेत हरित भुजा-बन्ध,  
एकाकृत रंग-गन्ध,  
शरदक अबन्ध भाव उमड़ि चलय गानमे,  
सामाक तानमे।



## अनभुआर ई बाट

नोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट,  
नमस्त डेग, बढ़य तँ कोमहर सूझि ने रहलै बाट।  
थाकल-ठेहिआयल छै जीवन,  
छिछिआइत बीतल छै यौवन।  
बल निरन्तर, रुकल ने कहियो, आइ मुदा अछि आँट,  
नोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।  
जनारण्यसँ घेरल-बाढ़ल,  
रहल सदा ममतासँ छारल।  
मुदा अपन सन कतहु ने किछुओ, अवसादक टा हाट,  
नोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।  
अन्धकारमे जे इजोत सन,  
से भगजोगनी केर नोत सन।  
बाढ-बताकेर गहन जालसँ टूटय सहजेँ टाट,  
नोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।  
चिर सफलता टा संजोगल,  
निघटि चुकल छै सकल मनोबल।  
नज्बे नहि, रड-रभसोसँ सहजेँ चित उचाट,  
नोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।





## सामाक तानमे

चान-दीप बारि आइ बैसलि के धानमे,  
हरियर परिधान मे ।

ज्योति-स्नात सभ अलंग,  
धवलित तन-मन अभंग,

हरित वर्ण रोम-रोम ठाढ़ ककर ध्यानमे,  
उज्जर मुसकान मे ।

कासक नव चास-बास,  
भैटक उज्ज्वल विकास,

छिड़िआयल सिङ्गरहार हास धान-धान मे,  
गन्ध प्राण-प्राण मे ।

दूरागन वंशी धुनि,  
प्रीति-अतिथि-आगम गुनि,

बारि रहल गीतक समाद कान-कान मे,  
रातिक अवसान मे,

श्वेत हरित भुजा-बन्ध,  
एकाकृत रंग-गन्ध,

शरदक अबन्ध भाव उमड़ि चलय गानमे,  
सामाक तानमे ।



## अनभुआर ई बाट

मोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट,  
बतमत डेग, बढ़य तँ कोमहर सूझि ने रहलै घाट ।

थाकल-ठेहिआयल छै जीवन,  
छिछिआइत बीतल छै यौवन ।

जलल निरन्तर, रुकल ने कहियो, आइ मुदा अछि आँट,  
मोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट ।

जनारण्यसँ घेरल-बाढ़ल,  
रहल सदा ममतासँ छारल ।

मुदा अपन सन कतहु ने किछुओ, अवसादक टा हाट,  
मोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट ।

अन्धकारमे जे इजोत सन,  
से भगजोगनी केर नोत सन ।

बाब-लताकेर गहन जालसँ टूटय सहजेँ टाट,  
मोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट ।

चिर सफलता टा संजोगल,  
निघटि चुकल छै सकल मनोबल ।

नच्यै नहि, रङ-रभसोसँ सहजेँ चित उचाट,  
मोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट ।





## जे छी अहाँ सतत हमरे छी

जे छी अहाँ, सतत हमरे छी, मन होइछ अनुमान,  
अहिक गन्धसँ मँह-मँह करइछ हमर बेआकुल प्रान ।

विश्व-नदीमे एमहर-ओमहर भसिआयल ई नाव,  
जखने जतहि कात ई लागय, लागय अहिक लगाव ।

मानक आसन पाबि होअय अछि हनर पीठपर हाथ,  
अपमानक गरदनियाँ लागय, अहिक झुकाओल माथ ।

तीक-बेजाय, क्षणक दीयठिपर अहिक सिनेहक टेम,  
अहिक देल ई संचित धन अछि, अछि खिपटा वा हेम ।

अहिक स्वरेँ बाजी जे बाजी अटपट तोतर बोल,  
अहिक सुनाओल सुती, बुझी, अछि ओना हमर की मोल ।

अहिक आसपर, अहिक भासपर चालित अछि ई यान,  
बिना अहाँक अहँक ई तन मन जीवन अछि निष्प्राण ।



## जीवन-सोना

साधल नहि जायत कंठस्वर, संगीत-मुखर ता होयत कोना ?

दुखक ज्वालाकेर ताप बिना जीवन-सोना नहि शुद्ध होअय,  
अज्ञान-अन्हरियामे ठेसाय मानव-मन की न प्रबुद्ध होअय ?

हारहु लय जेँ तैयार न छी तेँ जीत मुखर ता होयत कोना ?  
नालाक मुरभिसँ मातल जग-मालाक वेदना की जानय,

नधुमासक संगी-अलि, कोकिल शिशिरक पीड़ाकेँ की मानय ?  
बेइल नहि जायत काँट लगा, उद्यान सुधर ता होयत कोना ?

सुग किए जपइछ राम नाम, पिजरामे जेँ अछि बन्दी ओ ?  
काकक कर्कशता निन्दनीय, स्वच्छन्द फिरै अछि की तेँ ओ ?

बाझल चिन्तनमे अन्तर्मन, साधना मुखर नहि होयत ओना,  
साधल नहि जायत कंठस्वर, संगीत मुखर ता होयत कोना ?





## एहि खन चान क्षितिज पर आयल

एहि खन चान क्षितिज पर आयल !  
मनक उदधिमे सुधि लहरायल !

प्रियक पदध्वनि चीन्हल-जानल,  
सभ संकेत सहज अनुमानल ।

सुनल बोल प्रीतिक जे अनुक्षण  
आइ श्रवण-पथसँ टकरायल !  
एहि खन चान क्षितिज पर आयल !

डोपटा प्रियक निठाह इजोरिया,  
झँपल मनक सन्ताप-अन्हरिया ।

दुलित फूल-पातक स्वर-सौरभ,  
प्रियक निसासेँ मधु मिश्रायल !  
एहि खन चान क्षितिज पर आयल !

गाँखिक सीढ़ी दऽ कयो उतरल,  
हृदयासन पर सस्मित बैसल ।

अंग-अंग उल्सास तरंगित,  
मधुक कलश छुबिते ओँघड़ायल !  
एहि खन चान क्षितिज पर आयल !  
मनक उदधिमे सुधि लहरायल !



## अभिलाषा

जीवि रहल छी किए' ने वृत्ती, जीवन ई असहाय,  
विश्व-धारमे एकसर नाविक, निर्बल ओ निरुपाय ।

डेग-डेगपर मोकि रहल अछि काम, क्रोध ओ लोभ,  
घेरल छी दुर्गम भूतानिर्ग, चढ़ल करेजा क्षोभ ।

होयत कहिया अन्त न जानी जीवनकेर ई भार,  
नहि जानी पहुँचत ई कहिया नाव सागरक पार ।

ताकि रहल छी युग-युगसँ भेटय किछुओ बालोक,  
अन्तहीन जनु हमर प्रतीक्षा दऽ रहले नित शोक ।

सांसारिक लक्ष्यक पाछाँ हम रहलहुँ बहुत बेहाल,  
भेटल बहुत, बहुतमे हुसलहुँ, संघर्षक छल जाल ।

सूत्रधार, सामर्थ्य आव नहि, संघर्षक नहि बेर,  
अभिलाषा एतवे, ने नचाबी एहि जीवनकेँ फेर ।





ਸਤਿਨਾਮੁ

ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥  
ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥



ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥  
ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥

ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥  
ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥

ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥  
ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥

ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥  
ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥